IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

पर्यावरण संरक्षण में विभिन्न धार्मिक वृक्षों की भूमिका

डॉ. विनोद कुमार सैनी, सहायक आचार्य भूगोल

राजकीय कन्या महाविद्यालय, गुड़ा, नीमकाथाना, राजस्थान

शोध सारांश

हमें पर्यावरण संरक्षण के प्रयास के साथ ही साथ विकास के लिए भी प्रयास करना होगा, लेकिन साथ ही सम्पन्नता की होड़ में प्राकृतिक संसाधनों का अंधाधुध दोहन भी रोकना होगा। इसी अंधाधुध दोहन के कारण ही वनों के विनाश से मौसम–चक्र में परिवर्तन हुआ है और जल सतह नीची हो गई है। मनुष्य के लालच के कारण समुद्र न केवल प्रदूषित हुए हैं, उनकी प्राकृतिक संपदा भी धीरे–धीरे नष्ट हो रही है। ओजोन परत के नाश से वातावरण को गंभीर खतरा बना हुआ है। भूमि की उत्पादकता घटती जा रही है। आने वाली पीढ़ी को क्या हम यही उत्तराधिकार में प्रदान करेंगे।

लोगों को इस विषय में शिक्षित और जागरूक बनाकर ही यह प्रश्न हल किया जा सकता है। विकास के लक्ष्यों को पूरा करने के लिए आर्थिक उदारीकरण की प्रक्रिया के तहत पारिस्थितिकीय आधुनिकीकरण के कार्यक्रम पर अमल करने की सख्त जरूरत उजागर हो गई है। पारिस्थितिकीय आधुनिकीकरण का उद्देश्य प्राकृतिक संसाधनों के दोहन की लागत को स्वीकार्य सीमा में रखते हुए पर्यावरण संरक्षण के खर्च को कम से कम तथा उत्पादन और उपयोग की प्रक्रिया में सामग्री एवं ऊर्जा के कारगर इस्तेमाल से आर्थिक एवं पारिस्थितिकीय कार्य कुशलता के स्तर में बढ़ोत्तरी करना रहा है।

शब्द कुजी :– पर्यावरण, संस्कृति, तुलसी, आयुर्वेद, संरक्षण, प्रकृति, प्राकृतिक।

प्रस्तावना– भारतीय दर्शन में हिन्दु परिवारों में पौधे उनके जीवन के आवश्यक अंग माने जाते रहे हैं। अनेक वृक्षों की पूजा की जाती है तथा पूजा की सामग्री के रूप में प्रयोग किया जाता है। इसके परिणामस्वरूप मनुष्य ने पर्यावरण के प्रति सकारात्मक रवैया अपनाया। विभिन्न पेड़–पौधों की देवी–देवताओं से भी सम्बन्धित क्रिया, जिससे उपयोगी पौधों तथा वृक्षों का संरक्षण हो सके, क्योंकि ऋषि–मुनियों को इसका सही ज्ञान था, जिसे निम्नलिखित सूची द्वारा दर्शा सकते हैं –

1. तुलसी –

भारतीय संस्कृति और धर्म में तुलसी को उसके महान गुणों के कारण ही सर्वश्रेष्ठ स्थान दिया गया है। भारतीय संस्कृति में यह पूज्य है। तुलसी का धार्मिक महत्त्व तो है ही लेकिन विज्ञान के दृष्टिकोण से तुलसी एक औषधि हैं आयुर्वेद में तुलसी को संजीवनी बुटी के समान माना गया है। तुलसी में कई ऐसे गुण होते है। जो बड़ी–बड़ी जटिल बीमारियों को दूर करने और उनकी रोकथाम करने के सहायक है। हृदय रोग हो या सर्दी जुकाम, भारत में सदियों से तुलसी का इस्तेमाल होता चला आ रहा है। औषधियों गुणों से परिपूर्ण पौराणिक काल से प्रसिद्ध पतीत पावन तुलसी के पत्तों का विधिपूर्वक नियमित औषधि तुलसी सेवन करने से अनेकानेक बिमारियाँ ठीक हो जाती है। यह ऐसी रामबाण औषधि है जो

हर प्रकार की बिमारियों में काम आती है। जैसे स्मरण शक्ति, हृदय रोग, कफ, श्वांस के रोग, धवल रोग आदि में चमत्कारी लाभ मिलता है। तुलसी जीवन शक्ति संवर्धक औषधि वातावरण शोधन करने वाली तथा पर्यावरण संतुलन बनाने वाली है।

इण्डियन ड्रग्स पत्रिका (अगस्त 1977) के अनुसार :– ''तुलसी में विधमान रसायन वस्तुतः उतने ही गुणकारी है जितना वर्णन शास्त्रों में किया गया है। यह कीटनाशक है कीट प्रतिकार तथा प्रचण्ड जीवाणुनाशक है। विशेष कर एनांफिलिस जाति के मच्छरों के विरूद्ध इसका कीटनाशक प्रभाव उल्लेखनीय है। डॉ. पुष्यगंधन एवं सोबती ने अपने खोज पूर्ण लेख में बड़े विस्तार से विश्व में चल रहे प्रयासो की जानकारी दी है।''

एण्टीवायटिक्स एवं कीमोथेरेपी पत्रिका के अनुसार :– ''तुलसी का ईथर निष्कर्ष टी. वी. जीवाणु माइक्रोवैक्टीरियम ट्यूवर कुलोसिस का बढना रोक देता है। सभी आधुनिकतम औषधियों की तुलना में यह निष्कर्ष अधिक सान्द्रता में श्रेष्ठ बैठता है। श्री राम स्वामी एवं सिरसी द्वार दिये गए शोध परिणामों (द इण्डियन जनरल ऑफ फार्मेसी मई 1967) के अनुसार तुलसी की टी. वी. नाशक शक्ति विलक्षण है। इसी जीवाणु के ह्यूमन स्ट्रेन की वृद्धि को भी यह औषधि रोकती है।''

डॉ. भाट एवं बोर कर के शोध निष्कर्ष :– ''इनके अनुसार (जें. एस. आई. आर.) तुलसी के बीजों में एण्टोकोएगुलेस संघटक होता है। जो स्टेफिलोकोगुलेस के रक्त में प्रभाव को निरस्त करता है। इसके अतिरिक्त तुलसी के मधुमेह प्रतिरोधी, गर्भनिषेध तथा ज्वर नाशी प्रभावों पर भी विस्तार से वैज्ञानिक अध्ययन चल रहा है।''

वैल्थ ऑफ इण्डिया के अनुसार :– ''तुलसी का स्वरस तथा निष्कर्ष कई अन्य जीवाणुओं के विरूद्ध भी सक्रिय पाया गया है इसमें प्रमुख है। स्टेफिलोकोकस आंरियस, साल्मोनेला, टाइफोसा और एक्केरेशिया कोलाई आदि। इसकी जीवाणु नाशक क्षमता कार्बलिक अम्ल से छः गुण अधिक है।''

डॉ. कॉल एवं डॉ. निगम (जनरल ऑफ रिसर्च इन इण्डियन मेडीसीन योगा एण्ड होम्योपैथी 12/1977) के अनुसार– ''तुलसी का उत्पन्न तेल कल्वेसिला न्यूर्मोनी प्रोटिस बलेगरिस कैन्डीडां एल्बीकेन्स जैसे घातक रोगाणुओं के विरूद्ध सक्रिय पाया गया है।''

तुलसी एक रामबाण औषधि यह प्रकृति की अनुठी देन है। रासायनिक द्रव्यों एवं गुणों से भरपूर मानव हितकारी तुलसी रूखी, गर्म, उत्तेजक, रक्तशोधक, कफ, शोघहर, चर्मरोग निवारक एवं बलदायक है। यह कुष्ठ रोग का शमन करती है। वैज्ञानिको का मत है कि तपेदिक, मलेरिया, प्लेग कीटाणुओं को नष्ट करने की क्षमता तुलसी में विधमान है। इसको छूकर आने वाली वायु स्वच्छता एवं स्वास्थय कारक होती है। घरों में हरे और काले पतों वाली तुलसी पाई जाती है। दोनों का सेवन स्वास्थ्य लिए लाभदायक होता है।

प्रस्तुत सभी वैज्ञानिक शोधों एवं तुलसी के औषधिय गुणों से पूर्वज भली भाँति परिचित थे। इन कारणों से पौधे को धर में लगाया जाना जरूरी था। सब घरों में अनिवार्य उपस्थिति के लिए सबसे सुगम उपाय उसका पूजन ही था। इसीलिए तुलसी का पूजन किया जाता है।

2. पीपल –

भारतीय स्त्रियाँ पीपल को देवता मानकर उसका सिंचन करती हैं। इसी को वैज्ञानिक दृष्टि से देखेंगे तो यह कहा जाता है कि पीपल को भारतीय संस्कृति में देवता माना जाता है। वह जीवन को प्रभावित करता है।

सभी लोगों का सोचना हैं कि पीपल की पूजा करने से भूत–प्रेत दूर भागते हैं। वैज्ञानिक तर्क के आधार पर इसकी पूजा इसलिए की जाती है ताकि इस पेड़ के प्रति लोगों का सम्मान बढ़े और उसे काटे नहीं। पीपल एकमात्र ऐसा पेड़ है, जो रात में भी ऑक्सीजन प्रवाहित करता है।

वैसे तो सभी वृक्ष उपयोगी व पूज्य हैं, परन्तु पीपल को भारतीय संस्कृति में महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। अनेक पर्वों पर इसकी पूजा की जाती है। जलाशयों व कुएँ के समीप पीपल का उगना आज भी शुभ माना जाता है। इस वृक्ष की जड़ के निकट बैठकर जप, दान, होम, स्रोत, पाठ, ध्यान व अनुष्ठान किया जाता है।

'अश्वत्योपन व्रत' में महर्षि शौनक बताते है कि प्रातः पीपल के वृक्ष को लगाकर आठ वर्षो तक पुत्र की भांति उसका पालन करना चाहिये, इसके पश्चात् उपनयन संस्कार करके नित्य सम्यक् पूजा करने से अक्षय लक्ष्मी प्राप्त होती है। पीपल वृक्ष की नित्य तीन बार परिक्रमा करने व जल चढ़ाने पर दुःख का विनाश व स्वास्थ्य लाभ होता है। इस वृक्ष के दर्शन–पूजन से दीर्घायु, समृद्धि व यश की प्राप्ति होती है। श्रीमद्भगवद् गीता में भी इस की श्रेष्ठता का स्पष्ट उल्लेख है, श्री कृष्ण अर्जुन से कहते है –

''अश्वत्थः सर्व वृक्षाणां,
देवर्षीणां च नारदः
गन्धर्वाणां चित्ररथः,
सिद्धानां कपिलो मुनिः।।''

मैं सब वुक्षों में पीपल का वृक्ष, देवर्षियों में नारद मुनि, गन्धर्वों में चित्ररथ और सिद्धों में कपिल मुनि हूँ। स्वयं ईश्वर ने पीपल को अपनी उपमा देकर इसके देवत्व और दिव्यत्व को बताया है। इसी कारण शास्त्रों में पीपल के पत्तों को तोड़ना, इसको काटना या मूल सहित उखाड़ना वर्जित माना गया है।

शास्त्रों में उल्लेख है कि *''अश्वत्थः पूजितोयत्र पूजिताः सर्व देवताः।''*

अर्थात् पीपल की पूजा विधिविधान के अनुसार करने से सम्पूर्ण देवता स्वयं ही पूजित हो जाते हैं।

अथर्ववेद में पीपल वृक्ष में देवताओं का निवास बताया गया है– *''अश्वत्थो देवसदनः''।*

पर्यावरण शुद्धि की अद्भूत क्षमता

आयुर्वेद में पीपल के औषधीय गुणों का असाध्य रोगों के निदान में उपयोग बताया गया है। भारत में उपलब्ध विविध वृक्षों में जितना अधिक औषधीय महत्व पीपल वृक्ष का है, अन्य किसी वृक्ष का नहीं है, यह निरंतर दूषित गैसों का विषपान करता रहता है। पृथ्वी पर पाये जाने वाले सभी–वृक्षों में पीपल को प्राणवायु को शुद्ध करने वाले वृक्षों में सर्वोत्तम माना गया है।

अतः प्राचीन आचार–विचार के आधार पर जीवन दृष्टि में परिवर्तन कर त्यागपूर्वक उपभोग को आधार मानकर समग्र कल्याण की बात होनी चाहिए। प्रकृति के संसाधनों के प्रति श्रद्धा, आस्था, विश्वास, समर्पण व भक्ति भाव रखना होगा। इसी में जैव नैतिकता के भाव समाहित है।

इसी प्रकार के भावों का अनवरत प्रवाह भावी पीढ़ियों में होगा, तभी वृक्षों का संरक्षण सम्वर्द्धन होगा। हजारों वर्ष पहले ऋग्वेद के ऋषियों ने 'वृक्षों', वनस्पतियों को संरक्षण दे बताया था कि इनसे कल्याण है, इनका त्याग विनाश है।

3. आंवला –

कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष की नवमी को आंवला नवमी या अक्षय नवमी के रूप में मनाया जाता है। द्वापर युग की शुरूआत कार्तिक शुक्ल नवमी को हुई थी। यह युगादि तिथी है। देखा जाये तो यह प्रकृति के प्रति आभार व्यक्त करने का भारतीय संस्कृति का पर्व है क्योंकि आंवला पूजन पर्यावरण के महत्व को दर्शाता है, जागरूक करता है। इस दिन आंवले के पेड़ का पूजन कर परिवार के लिए आरोग्यता व सूक्ष्म वृद्धि की कामना की जाती है। इस दिन किया गया तप, जप,

दान इत्यादि व्यक्ति को सभी पापों से मुक्त कर मनोकामनाओं की पूर्ति करने वाला होता है। धार्मिक मान्यताओं और शास्त्रों के अनुसार इस दिन किया गया पुन्य कभी समाप्त नही होता है।

पद्म पुराण के अनुसार यह पवित्र फल भगवान श्री विष्णु को प्रसन्न करने वाला व शुभ माना गया है। इसके सेवन से मनुष्य सब पापों से मुक्त हो जाते हैं। इसका रस पीने से धर्म संचय होता है और उसके जल से स्नान करने से दरिद्रता दूर होती है, तथा सब प्रकार के ऐश्वर्य प्राप्त होते हैं। आंवले का दर्शन स्पर्श तथा उसके नाम का उच्चारण करने से वद्धायक भगवान श्री विष्णु अनुकूल हो जाते हैं।

इस प्रकार उपर्युक्त उदाहरणों से माना गया है कि भारतीय दर्शन में हिन्दू मत के अनुसार पौधों एवं वृक्षों को धार्मिक रूप में ही पवित्र तथा पूजा की वस्तु नहीं मानते, बल्कि उनके संरक्षण की भी बात होती रही है। वृक्षों की पूजा ही नहीं की जाती बल्कि हरे–भरे वृक्षों को काटना भी वर्जित माना गया है क्योंकि वैदिक काल के समय से ही सभी को यह भी पता था कि पौधों को काटना, वनों को नष्ट करना मनुष्य के लिए हानिकारक है। इसके अभाव में बीमारियाँ फैलती हैं तथा पर्यावरण में प्रदूषण होता है।

सारांश – जब कभी पर्यावरण बदलता है तो मौसम तंत्र भी बदल जाता है और यह जब होता है तो इसका असर मनुष्य के शारीरिक स्वास्थ्य पर भी पड़ता है। इस दौर में प्रकृति का संतुलन गड़बड़ा रहा है तभी तो कहीं अति वर्शा हो रही है, कहीं सूखा है तो कहीं प्राकृतिक आपदाओं का सामना करना पड़ रहा है। उत्तराखंड में हुई तबाही का मंजर प्रकृति के असंतुलन का ही तो परिणाम है। इसलिए जरूरी यह है कि पर्यावरण की सुरक्षा और प्रकृति के संरक्षण के लिए मनुष्यों के बीच ही एक आंतरिक संतुलन स्थापित हो।

सन्दर्भ सूची

- डी.ए. (1974), ''पर्यावरण प्रभाव विश्लेषण – प्रस्तावित ट्रांस का उदाहरण – अलास्का पाइपलाइन'', यू.एस. भूवैज्ञानिक परिपत्र 695.
- खान, एम.जेड.ए. और एस.के. अग्रवाल (2004), ''पर्यावरण भूगोल'', आशीष पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली।
- मोहन (1989), ''पर्यावरण संबंधी मुद्दे और कार्यक्रम'', आशीष पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली,।
- ऋचा राय, मधु राजपूत (2011) वॉल्यूम 55 पृष्ठ 77–102, केसियस एयर पोल। कृषि पर उत्सर्जन और नपुंसकता के वर्तमान और भविष्य के रुझानों की समीक्षा आईएसएसएन – 044 – 0483।
- एरेनफेल्ड, डी.डब्ल्यू. (1970), ''जैविक संरक्षण'', होल्ट, राइनहार्ट और विंस्टन, न्यूयॉर्क।
- जाना, एम.एम. (1991), ''एनवायरनमेंट डिग्रेडेशन एंड डेवलपमेंट स्ट्रैटेजीज इन इंडिया'', आशीष पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली,
- सिंह, जे. (1994), ''भूगोल और पर्यावरण – पूर्वव्यापी और संभावना'', भूगोल और पर्यावरण के शिक्षण में, विभाग, ऑफ भूगोल, पूना यूनिवर्सिटी,